प्रातः क्लास 24-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओम डबल शान्ति। बच्चे जब यहां बैठते हैं तो यह जानते हो बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है और सद्गुरु भी है। तीन की दरकार रहतीहै। बाप, टीचर और पिछाड़ी में गुरु। यहां याद भी ऐसे करना है। क्योंकि नई बात है ना। बेहद का बाबा भी है। बेहद का माना सभी का। यहां जो भी आवेंगे कहेंगे बाबा। यह स्मृति में लाओ। इसमें किसको संशय हो तो हाथ उठाओ। यह वन्डर-फुल बात है ना। जन्म-जन्मान्तर कब ऐसा नहीं मिला होगा जिसको तुम बाप टीचर गुरु समझो सो भी सुप्रीम। बेहद का बाप, बेहद का टीचर, बेहद का सद्गुरु। ऐसा कब मिला। सिवाय इस पुरुषोत्तम संगम युग के कब मिल न सके। इसमें किसकी को संशय हो तो हाथ उठावे। यहां सभी निश्चय बुधि हो बैठे हैं। यहां जब बैठते हो तो किसको याद करते हो। जानते हो शिवबाबा है। वही पढ़ाते भी हैं, फिर गुरु भी बनते हैं। मुख्य है ही तीन। बेहद का बाप बेहद का बाप नालेज भी देते हैं। बेहद की नालेज यह एक ही है। हद की नालेज तो तुम अनेक पढ़ते आये हो। कोई वकील बनते हैं कोई सर्जन बनते हैं। क्योंकि यहांतो डाक्टर वकील आदि सभी चाहिए ना। वहां तो इन सभी की कुछ भी दरकार नहीं। वहां दुःख की कोई बात ही नहीं होती। तो अभी बाप बैठ बेहद की शिक्षा बच्चों को देते हैं। फिर आधा कल्प कोई शिक्षा पढ़ने की तुमको कोई दरकार ही नहीं। एक ही बार शिक्षा मिलती है जो 21 जन्मों के लिये फलीभूत होती है। अर्थात उनका फल मिलता है। वहां तो डाक्टर जज बैरीस्टर आदि होते ही नहीं। यह तो निश्चय है नाबरोबर ऐसे हैं। वहां कोई दुःख होता ही नहीं। कर्म-भोग होता ही नहीं। बाप कर्मों की गति बैठ समझाते हैं। वह गीता सुनाने वाले क्या ऐसी बातें सुनाते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को यह सहजराजयोग सिखाता हूं। उसमें तो लिख दिया है कृष्णभगवानुवाच। परन्तु वह है दैवीगुणों वाला मनुष्यवाच। शिवबाबा तो कोई नाम धराते नहीं। उनका दूसरा कोई नाम नहीं। बाप कहते हैं मैं इस शरीर का लोन लेता हूं। यह शरीर रूपी मकान हमारा नहीं है। यह भी मकान है ना, खिड़कियां आदि सभी हैं। तो बाप समझाते हैं मैं हूं तुम्हारा बेहद का बाप। अर्थात सभी आत्माओं का बाप हूं। पढ़ाता भी हूं आत्माओं को। उनको कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर। अर्थात रूहानी बाप। और कोई किसको भी रूहानी बाबा नहीं कहेंगे। यहां तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप है स्प्रीचुअल फादर। कलकते से समाचार आया था वर्ल्ड स्प्रीचुअल कानफ्रेन्स हो रही है। वास्तव में स्प्रीचुअल कानफ्रेन्स तो है नहीं। वह सभी है नानस्प्रीचुअल। देह-अभिमानी हैं। बाप कहते हैं बच्चे देहीअभिमानी भव। देह का अभिमान छोड़ो। वहथोड़ेही ऐसे किसको कहेंगे। स्प्रीचुअल अक्षर भी अभी डालते हैं। आगे सिर्फ रीलिजन कानफ्रेन्स कहते थे। स्प्रीचुअल का कोई अर्थ नहीं समझते हैं। स्प्रीचुअल फादर अर्थातनिराकारी फादर। तुम आत्मायें हो स्प्रीचुअल बच्चे। स्प्रीचुअल फादर आकर तुमको पढ़ाते हैं। यहसमझ और कोई में हो न सके। बाप जो बैठ बतलाते हैं कि मैं कौन हूं। गीता में यहनहीं है। बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं मैं तुमको बेहद की शिक्षा देता हूं। इसमें वकील सर्जन जज आदि कोई की दरकार नहीं। क्योंकि वहां तोएकदम सुख ही सुख है। दुःख का नाम-निशान नहीं। यहां फिर सुख का नाम-निशान न है। इसको कहा जाता है प्राय। सुख तो जैसे काग बिष्टा समान है। जरा सा सुख है। तो वह बेहद सुख की नालेजदे कैसे सकते। इसलिये गायनभी है गुरु जिसकी अन्धले चेला सत्यानास। यह हाल हो गया है सभी का। आधा कल्प से भक्ति करते आये हैं। सत्यानास होते गये हैं। पहले जबदेवी देवताओं का राज्यथा तो सत्या 100% अच्छी थी। तो यह है बेहद की नालेज। तुम जानते हो यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। जिसका बीज रूप ऊपर में है। उनमें सारी नॉलेज नालेज है झाड़ की। मनुष्यों को यहनालेज नहीं है। आम का बीज है उनको थोड़ेही नालेज है। वह तो जड़ है। तुमहार में सारी नालेज है उन बीजों को भी। बाप भी कहते हैं मैं में नालेज है। मैं चैतन्य बीज रूप हूं। मुझे कहते ही हैं ज्ञान का सागर। ज्ञान से गति सदगति होती है। मैं हूं सभी का बाप। मुझे पहचानने से तुम बच्चों को वरसा मिल जाता है। परन्तु फिर राजधानीहैना। स्वर्ग में भी मर्तबे तो नम्बरवार ही होते हैं। बाप एकही पढ़ाई पढ़ाते हैं। पढ़ने वाले तो नम्बरवार हैं। इसमें फिर और कोईपढ़ाई की दरकार नहीं। वहां कोई बिमार नहीं होता। पांई पैसे की कमाई के लिये पढ़ाई नहीं पढ़ते। तुम यहां से—

बेहद का वरसा ले जाते हो। वहां यह मालूम नहीं पड़ेगा कियह हमको कोई ने दिलाया है। यह तुम बच्चे समझते हो। हद की नालेज तो तुम पढ़ते आये हो। अभी बेहद की नालेज पढ़ाने वाले को देख लिया, जान लिया। जानते हो बापप्रबाप भी है, टीचर भी है, आकर हमको पढ़ाते हैं। सुप्रीम टीचर है राजयोग सिखलाते हैं। सच्चा2 सद्गुरु भी है। यह है बेहद का राजयोग। बैरीस्टरी आदि पढने लिये भी टीचरसे योग रखा जाता है। परन्तु वह बैरीस्टरी डाक्टरी ही सिखावेंगे। क्योंकि यह दुनिया ही दुःख की हैना। वह सभी हैं हद की पढ़ाईयां। यह है बेहद की पढ़ाई। बाप सभी को बेहद की पढ़ाई पढ़ाते हैं। यह भी जानते हो यह बाप टीचर सद्गुरु कल्प2 आते हैं। फिर यही पढ़ाई पढ़ाते हैं। सतयुग त्रेता के लिये। फिर यहप्रायः लोप हो जाता है। सुख की प्रारब्ध पुरी हो जाती हैड़। मा अनुसार। यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। उनको ही पतित-पावन कहा जाता है। रावण को तमेव माताश्चपिता ... वा पतित पावन कहेंगे क्या। इनके मर्तबे और उनकी मर्तबे में रात-दिन का फर्क है। अभी बाप कहते हैं मुझे पहचानने से तुम सेकण्ड में सेकण्ड मे जीवनमुक्ति पासकते हो। अब कृष्ण भगवन होता तोउनको तो कोई भी ढट पहचान लेते। कृष्ण का जन्म कोई दिव्य अलौकिक नहीं गाया हुआ है। सिर्फ पवित्रता से होताहै। बाप से तो कोई के भी गर्भजेल से नहीं निकलता हैं। समझाते हैं मीठे2 रूहानी बच्चो। रूह ही पढ़ता करता है ना। सभी संस्कार अच्छे वा बुरे रूह में ही रहते हैं। जैसो2 कर्म करती हैउस अनुसार ही उसको शरीर मिलता है। कोई बहुत दुःख भोगते हैंकोई काना कोई बहरा होता है। कहेंगे पास्ट में ऐसे कर्म किये हैं। जिसका फल यह है। आत्मा के कर्मो अनुसार ही रोगी आदि शरीर मिलता है। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको पढ़ाने वाला है गाड फादर। गाड टीचर। गाड प्रीसेप्टर। उसको कहते ही हैं गाड्परमआत्मा। उसको मिलाकर परमात्मा कहते हैं। सुप्रीम सोल। इनको तो सुप्रीम नहीं कहेंगे। सुप्रीम अर्थात ऊंच ते ऊंच। पवित्रते पवित्रे। मर्तबे तो होक के अलग2 होते हैं। कृष्ण का जो मर्तबा हैवह दूसरे को मिल नहींसकता। प्राईम मिनिस्टर का मर्तबा दूसरे को थोड़ेही देंगे। बाप का भी मर्तबा अलग है। ब्र०वि०शं० का अलग है। ब्रह्मा देवता, विष्णु देवता शंकर देवता कहते हैं। अभी शंकर देवता, शिव तो परमात्मा है ना। दोनो को मिलाकर शिव-शंकर कैसे कहेंगे। दोनो अलग2 है ना। न समझने कारण शिव शंकर एक ही कह देते हैं। नाम भी ऐसे ही रख देते हैं। राम अलग कृष्ण नाम भी रखते। फिर राम कृष्ण एक का भी नामरख देते हैं। इतनाऊंच नाम नीच पर थोड़ेहा रखना चाहिए। कहां वह राधे कृष्ण। 00% पावन, कहां यह पतित। तो इसको कहेंगे। इडल्ट्रेट ईलेट्रेट। बाप ने ऐसा कोईनाम नहीं रखा। बापने तो बड़ी ही रमणिक नाम रखे। कहां वह ल०ना० विश्व के मालिक, कहां यह छी छी उल्टी लटके हुये उल्लू मिसल मनुष्य। तो यह सभी बातें बाप ही समझाते हैं। कल्प2 बाप ही आकर समझाते हैं। तुम जानते हो यह बाबा भी हैटीचर भी है तो सद्गुरु भी है। हरेक मनुष्य को बाप भी होता है गुरुभी होता है। जब बूढ़े होते हैं तब गुरु करते हैं। आजकल छोटेपन में ही गुरु कराये देते हैं। समझते हैं गुरुकर न किया तो अवगत हो जावेंगा। आगे 60 वर्ष के बाद गुरु करते थे। वह होती हैवानप्रस्ती अवस्था। निर्वाण। अर्थात वाणी से परे धाम है। स्वीटसायलेन्स होम। जिसमें जाने लिये आधा कल्प तुमने मेहनत की है। परन्तु पता नहीं है तो कोई जा कैसे सकते। कितने रास्ता बता कैसे सकते। एक के सिवाय तो कोई रास्ता बता न सके। सभी की बुधि एक जैसी नहीं होती है। कोई तो जैसे कथा बैठ सुनते हैं। फायदा कुछ नहीं। उन्नति कुछ नहीं। तुमने जन्म-जन्मान्तर कितनी कथाएं सुनी हैं। ढेर शास्त्रहैं। बाप कोईशास्त्र लेते हैं क्या। कुछ भी नहीं। दरकार ही नहीं। त्रिमूर्ति भी सूक्ष्मवतन में होता है। सह सिर्फसमझाने लिये दिखाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो हड्डियां मास दिखाना न चाहिए। उन्हीं को फरिश्ते कहते हैं। यह भी गायन है। मिरवा मौत मलूका शिकार ... तुम अभी बगीचे के फूल बनते हो। फूल से कांटा बनेफिर बाप कांटा से फूल बनाते हैं। तुम ही पूज्यथे फिर पुजारी बने। 84 जन्म लेते2 सतोप्रधान से तमोप्रधान पतित बन गये हो। बाप ने सीढ़ी सारी समझाई है। अभी फिर हम पतित से पावन कैसे बनेंयह किसको भी पता नहीं हैं। गाते भी हैं हे पतित-पावन आओ आकर पावन [illegible] पानी की नदियां

24-10-68-3ह०

सागर आदि को पतित-पावन समझ क्यों जाकर स्नान करते हैं। स्नान करने की भी बहुत जगह होते हैं। बड़ा सम्भाल से सागर में जाना होता है। सागर ही लहरें इतनी जोर से आती हैं जो मनुष्य को फटसे ले जाते हैं। बड़ा खबरदारी से जाते हैं। कोई2 तो डूब जाते हैं। कलकते मैनदी और सागर इकट्ठा होता है वहां जाकर स्नान करते हैं। जिसको संगम कहा जाता है। यह लोग पतित-पावन गंगा को कहते हैं। परन्तु नदी भी कहां से निकली। सागर से ही निकलती है ना। यह सभी सागर के ही सन्तान हैं। तो हर एक बात अच्छी रीति समझने की है। यहां तो तुम बच्चियां संगम में बैठी हो। बड़ा ही अच्छा लगता है। बाहर कुसंग में जाने से तो तुमको बहुत निपटियां सुनावेंगी। फिर इतने सभी बातें भूल जावेंगे। कुसंग में जाने से ही घुटका खाने लग पड़ते हैं। ताकत का तब मालूम पड़ता है। परन्तु यह बातें भूलनी न चाहिए ना। बाबा हमारा बेहद का बाबा भी हैटीचर भी हैपारे भी ले जाते हैं। इस निश्चय से ही तुम आये हो। वह सभी है जिसमानी लौकिक पढ़ाई। लौकिक भाषाएं। यह है अलौकिक। बाप कहते हैं मेरा जन्म भी अलौकिक है। मैं लोन लेता हूं। पुरानी जुती लेता हूं। सो भी पुराने से पुराना। सबसे पुरानी जुती है। बाप ने जुता लिया है जिसको लांगबुट कहते हैं। यह कितनी सहज बाते हैंयह तो भूलनी नहीं है। परन्तु माया भूला देती है। बाप बाप भी है, बेहद की शिक्षा भी देने वाला है। और कोई दे न सके। बाबा कहते हैं भल जाकर देखो कहां से मिलती है। सभी हैं मनुष्य। वह तो यह नालेज दे न सके। भगवान एक ही रथ लेते हैं जिसको भाग्यशाली रथ कहते हैं। जिसमें बाप की प्रवेशता होती है। पदमापदमभाग्य शाली बनाने। यह बिल्कुल ही नजदीक का दाना है। ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। शिव बाबा इनको यह सुनाते हैं। तुमको भी इन द्वारा शिव बाबा सुनाते हैं। बेज में क्लीयर है शिव बाबा ब्रह्मा द्वारा यह बनाते हैं। ब्र0 सा0 सो फिर ल0ना0 बनते हैं। विष्णु की पुरी स्थापन होती है। इसको कहा जाता है राजयोगराजाई स्थापन करनेका। अभी यहां सुन तो रहे हैं। परन्तु बाबा जानते हैं बहुतों के कान से बह जाता है। कोई धारण कर सुना सकते हैं। उनको कहा जाता है महारथी। सुन कर और धारण करते हैंऔरों को रची से समझाते हैं। महारथी समझाने वाला होगा तो झट समझेंगे। घोड़ेसवार से कम। प्यादे से और भी कम। यह तो बाप जानते हैं कौन2 महारथी हैं। कौन घोड़ेसवार हैं। अभी इसमें मुंझने की तो बात ही नहीं। फिर भीझूटके खाते रहते हैं। आंखें बन्द कर बैठते हैं। कमाई में कब झुटका आता है क्या! उदासी से बाबा समझ जाते हैं यह थका हुआ है। कमाई में बेकद थकावटनहीं होती है। उदासी है उदासी की निशानी। फिर धारणा हो न सके। कोई न कोई बात की अन्दर घूटके खाते रहने वाले कोउदासी बहुत आती है। अभी तुम बाप के घर बैठे हो। इनको कहा जाता है ईश्वरीय परिवार। सिर्फ ईश्वरीय परिवार भी नहीं परन्तु वह टीचर भी है सतगुरु भी है। परिवार भी ऐसे हैं। बच्चे भी है, टीचर भी बनते हैं, फिर गुरु भी बनते हैं रास्ता बताने लिये। मास्टर गुरु कहा जाता है ना। तो बाबा का राईट हैंड बनना चाहिए। जो बहुतों का कल्याण कर सके। धंधे सभी हैं मैं है नुकसान, बिगर धंधे नर से नरा0 बनने को। सभी की कमाई खत्म हो जानी है। नर से ना0 बनने का धंधा बाप ही सिखलाते हैतो फिर कौन सो पढ़ाई पढ़नी चाहिए। जिनके पास धन बहुत है वह समझते हैं स्वर्ग तो यहां ही हैं। बापू गांधीने रामराज्य स्थापन किया। अरे दुनिया तो यह तमोप्रधान पुरानी है ना। और ही दुःख बढ़ता जाता है। इनको रामराज्य कैसे कहेंगे। परन्तु बात यह पूछो। भगवान को तो ठिकर भिंतर में ठोक देते हैं। गांधी के लिये कब कहेंगे ठिकर भिंतर में है। या कच्छ मच्छ अवतार उनके लिये कहेंगे? कितने बेसमझ बन पड़े हैं। बेसमझ को तमोप्रधान कहा जाता है। समझदार होते हैं सतोप्रधान। यह चक्र फिरता रहता है। इसमें कुछ भी बाप से पूछने का नहीं रहता। बाप का फर्ज है रचयिता और रचना का ज्ञान देना। वह तो देते रहते हैं। मुरली में सभी समझाते रहते हैं। सभी बातों का रेसपान्ड मिल जाता है। बाकी पूछेंगे क्या। बाप के सिवाय कोई समझा नहीं सकते तो पूछ भी कैसे सकते। सतयुग में मेडीकल आफीसर्स की दरकार ही नहीं। वहां तो एवर हेल्थी एवर हेल्दी एवर हेपी रहते हैं। यह भी तुम बोर्ड पर लिखसकते हो। एवर हेल्दी हेल्दी हेपी 2। जन्मों के लिये बनना है तो आकर समझो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानीबाप का याद प्यार गुडमार्निंगऔर